भूकम्प कैसे रोका जाये ?

–मानिकचन्द नवलखा

वैज्ञानिकों व अभियन्ताओं के गहराई से कई शोध किये जाने के बावजूद भूकम्प को रोकने के प्रयासों में सफलता न प्राप्त हुई। इसका कारण है कि भिन्न-भिन्न प्रकार के चौरासी लाख जीवों का वर्णन जो कुछ श्रमण धर्मावलम्बी, अहिंसा महाव्रत पालने हेतु गहराई से समझाने का प्रयास करते हैं, उसे आधुनिक वैज्ञानिक, प्रचलित हिंसक आदतों में फँसे रहने के कारण स्वार्थवश, समझने का प्रयास न करना व धर्म का विज्ञान से समन्वय करने का वातावरण तैयार न हो सका। प्रत्येक जीव किसी उपयोगी कार्य के लिए ही जन्म लेता है व पर्यावरण को सुचारू रूप से रखने में भी कई जीव उपयोगी हो सकते हैं। ऐसे कई कार्य यदि मशीनों व यन्त्रों से किये जावे तो खरबों डॉलर की आवश्यकता होगी, जो कार्य कई जीव बिना अधिक खर्चे के सावधानी रखने से भी कर सकते हैं। पर आधुनिक मानव खरबों डॉलर प्राप्त करने की कोशिश करेगा पर स्वार्थ वश जीवों पर सावधानी बरतना ठीक न समझेगा। पानी या समुद्र के जीवों का भण्डार, ऊर्जा हेतु कई कार्यों में उपयोगी हो सकता है जो कार्य मशीनों से कठिन व अति खर्चीला, असम्भव सा नजर आता है। पर मानव का स्वार्थ उन जीवों को बचाने में बाधक हो जाता है।

इस पृथ्वी के अन्दर भी गहराई पर कई खड्डे, दरारे, नाले, नदियां व तालाब कई जगहों पर होते हैं जिनका सम्बन्ध समुद्र के पानी से गहराई पर समुद्र तल पर व नीचे होता है। संसार में ७५ प्रतिशत से ज्यादा जगह समुद्रों ने ले रखी है। समुद्र के पानी व नदियों के पानी का मन्थन, तापक्रम की भिन्नता व वायु के प्रभाव व जीवों की ऊर्जा आदि से, वेग से होता रहता है जो पृथ्वी के आन्तरिक तापक्रम को प्रभावित करता है। पानी के असंख्य जीव मछलियाँ, मगरमच्छ आदि पृथ्वी व समुद्र के आन्तरिक सम्बन्धों को स्वच्छ रखने में, पानी के बहाव व मन्थन को बनाये रखने में, खरबों किलोवाट बराबर ऊर्जा के उपयोग से मदद करते हैं। मछलियों की ऊर्जा का मुकाबला मशीनों की ऊर्जा से नहीं हो सकता। व्हेल मछलियाँ किसी जमाने में एक किलोमीटर से ज्यादा लम्बी होती थी। यदि उन व्हेल-मछलियों को न पकड़ा जावे तो आज भी काफी लम्बी व्हेल मछलियाँ जो एक टापू को दूसरे टापू से भी जोड़ दे (जो टापू पास-पास हो) समुद्र में नजर आ सकती है। इन मछलियों का व समुद्र तल व नीचे गहराई पर कई अन्य मछलियों व जीवों का कार्य कीचड़ साफ करने में व मन्थन के वेग बढ़ाने में काफी उपयोगी होता है। जो मन्थन, पृथ्वी के नीचे गहराई पर दरारे, नाले, खड्डे आदि को समुद्र तल के काफी नीचे का पानी पहुँचाने में उपयोगी होता है व मछलियाँ कीचड़ खाने हेतु दरारों को भी साफ करने में अपनी ऊर्जा से मदद करती है। पानी के इस सम्बन्ध व बहाव से पृथ्वी के अन्दर का तापक्रम का सन्तुलन बना रहता है। यदि यह सन्तुलन टूट जावे व किसी अमुक जगह पर तापक्रम जरूरत से ज्यादा बेहद बढ़ जावे तो पानी कम होने पर भाप में बदलते हुए गैस का गुब्बारा-सा बन कर दबाव बढ़ता ही जाता है। जो स्वभाव परिणत उदार (स्थूल) बड़े पुद्गलों के टकराने से तोड़ते हुए कम्पन्न पैदा करते हैं। क्योंकि कीचड़ के साफ न होने से सारे रास्ते बन्द हो जाते हैं। हिन्द महासागर, गंगा नदी, अरब सागर व बंगाल की खाड़ी में व ब्रह्मपुत्रा में मछलियों के कम होने पर भूकम्प की संभावना बढ़ जाती है। चूँकि संसार के धनी प्रदेश जरूरत से ज्यादा खाने हेतु मछलियाँ पकड़वाते हैं, मछलियाँ बहुत कम होती जा रही है। ऊर्जा का उपयोगी भण्डार कम होने से यानी ताकतवर बड़ी मछलियों की कमी के कारण भूकम्प आता है, खाद कम हो जाता है व मानसून का रुख भी बदल जाता है। भूकम्प को रोकने के लिए समुद्र के जीवों को कम से कम छेड़ा जावे। यह धारणा कि मछलियाँ आदि न पकड़ने से खाद्य पदार्थ कम होंगे गलत है, क्योंकि मछली के साथ चावल खाने की खपत बढ़ जाती है। दाल से चावल कम खाया जाता है। मछली अति तामसिक होने से आबादी बढाती है, मनुष्य की उम्र कम होती है आदि आदि।

(भा. विज्ञान कांग्रेस में ७-१-९४ पढ़े गये शोध पत्र के हिन्दी अनुवाद के कुछ अंश उपरोक्त लिखित लेख में दिये गये हैं।)

पता :
मानिक चन्द नवलखा
ए-४९, जनता कालोनी,
जयपुर ३०२ ००४ (राज)

❁ मनोबल कुछ मनुष्यों का तो स्वभाव से ही क्षीण होता है और कुछ का उसके संगी-साथी क्षीण कर देते हैं।

❁ दिमाग में धर्म का सहारा चाहिये और दिल में धर्म के प्रति विश्वास चाहिये।

–उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org